विद्यालय गीत

इक नवीन दृष्टि और, इक नवीन चेतना ।
हुई साकार कल्पना, तो ज्ञान भारती बना ।।

था स्वप्न संस्कारयुक्त, नौजवान पीढ़ियाँ,
कदम बढ़ा लें जिस दिशा में, छू लें वो बुलन्दियाँ,
ललित विचार से भरे, ये फूल दिग–दिगन्त हों,
धरा से सहनशील हों,हृदय से निष्कलंक हों,
समर्थ और दक्ष हाथ, साथ–साथ जुट गए,
कोई बना था पार्थ, कोई इनका सारथि बना ।।

अतीत की विभूतियाँ, भविष्य की मशाल हों,
परार्थ की डगर पे, स्वाभिमान भरी चाल हो,
अनन्त झंझावात हों, न हार मान हम रूकें,
सवाल की तरह अड़ें , जवाब की तरह झुकें
पवित्र अनुष्ठान में, जो धूप दीप–सा जला ,
वो इस अखंड यज्ञ की, पवित्र आहुति बना ।।

गीत रचना – नूतन कपूर
संगीत – राकेश मेहता